

Vol 5 Issue 12 Jan 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary
Research Journal

*Indian Streams
Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pintea, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, IasiMore

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikar Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotiya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org



iRdh , - I h-



स्त्री विमर्ष और हिंदी उपन्यास



पत्की ए. सी.

सहा. प्राध्यापक, नूतन महाविद्यालय, सेलू जि. परभणी.

Abstract :

स्त्री ईश्वर की अदभुत सृष्टि है। स्त्री भाक्ति, भील और सौंदर्य की मूर्ति है। पुराने जमाने से लेकर भारत में भाक्तिपूजा की परंपरा रही है। स्त्री साक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है। और यही साक्तिकरण उपन्यासों के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री संघर्ष करते हुये आगे बढ़ रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियाँ हैं उनका सामना भी बड़े धैर्य के साथ कर रही है। स्त्री – विमर्ष अर्थात् स्वत्व को खोजने की प्रक्रिया है। अपनी पहचान भाक्ति और सत्ता को जानने की कोशिश करते हुये स्त्री जागरण की बात उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती है। उपन्यास समाज के साथ चलने वाली साहित्यिक विधा है। साहित्यिक विधा में स्त्री को सही रूप से जानने पहचानने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तावना :

वर्तमान भाताब्दी साक्तिकरण एवं स्त्री विमर्ष के नाम है। जब से महिला साक्तिकरण वर्ष मनाया गया तभी से नारी, महिला व स्त्री भाब्द विषय या मुद्दों के सागर की अतल गहराई से धरातल पर उभरकर मानो एक तरह से उछलकर सामने आये हैं। यह भाब्द अपनी अर्थवत्ता चाहें जितनी गहराई से बना सका हो किंतु यह सभी जागरुक लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, व्यवसायियों, उद्यमियों, विज्ञापनदाताओं, समाज सेवियों, कार्यकर्ताओं, मीडिया, फिल्म यहाँ तक की विवस्त्ररीय समस्त जगत में उथल पुथल मचा देनेवाला आकर्षक चौंकाउ भाब्द सिद्ध होकर आया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, आज हर कोई अपने ढंग से स्त्री के लिए सोच रहा है और स्त्री के उत्थान की बात कर रहा है। साहित्य का ज्वलंत मुद्दा स्त्री-विमर्ष है। लेखक, साहित्यकार व बुद्धिजीवी हैं और वह भी सदियों से भोशित, दलित, पीछे धकेली गयी स्त्री को ही केंद्र में लाने के लिए संघर्षरत है। हर तरफ स्त्री की गुहार है, पुकार है, उसके लिए कुछ करने का जुनून न केवल स्त्री स्वयंसेवी संस्था व संगठनों में है वरन् स्वयं महिलाओं में भी ऐसी सक्रियता तथा सजगता पनप रही है।

‘नारी को आदिवाक्ति’ भले ही कहा गया हो पर वह पुरुष के इस कथित ‘अंतिम निर्णय’ की लक्ष्मण रेखा को कभी नहीं लांघ पाती। घर से बाहर भले ही अपना स्वर मुखर करले, मगर घर की डयोढ़ी चढ़ते हुए उसकी सारी भाक्ति, क्षमता, सामर्थ्य एवं स्वातंत्रता चौखट के बाहर रह जाती है। जब तक नारी के इस स्वयंनिर्णय स्वतंत्र फैसले करने का अधिकार नहीं जगता है तब तक वह स्वतंत्र मानी ही कब जायेगी? अब वह समय चुक गया है जहाँ स्त्रियों बच्चे, गृहस्थी, सिलाई, बुनाई व

परंपरागत वधू बन सुहाग चिन्हों को धारण कर अपने में गौरवान्वित हो कर घर की चार दीवारों में कैद रहे। सब कुछ उसके निर्णय पर छोड़ दिया जायेगा कि वह क्या बन कर रहे? असलियत तो यह है कि उसे अपने पोंवों पर खड़ा होना होगा। विद्रोह का झंडा पुरुषों के विरुद्ध गाड़ने में नहीं चलेगा। उसे पुरुष मानसिकता को साथ लेकर चलना होगा जो उसके हक में ही सोचे।

आधुनिक युग में हिंदी साहित्य में उपन्यास, नाटक, कहानी आदि विधा द्वारा नारी को किसी न किसी रूप में प्रस्तुत किया है। उपन्यास नये युग के नये मनुष्य की विधा है। विविध विशयों को लेकर, समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे गये। साहित्य- समीक्षा में साठोत्तरी साहित्य की विशेष चर्चा हो रही है। उसका कारण यह है कि सामाजिक-राजनीतिक-वैविक स्थितियों का निरपेक्ष, यथार्थमूलक आकलन जितना इधर हुआ है या हो रहा है इतना पहले कभी नहीं हुआ। अब हम यहाँ पर साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों की चर्चा करेंगे।

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में कदाचित्त पहली बार सन 60 के बाद स्त्री-पुरुष, पती-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के संबंधों पर दृष्टिपात किया गया है। आज के उपन्यास की प्रमुख विशेषता है साधारण मनुष्य की अवधारणा। मनुष्य की इस साधारण छवि को उसकी समूची भावित-आवित के साथ आकलित साठोत्तरी उपन्यास ने किया है। डॉ रामदरा मिश्र कृत 'जल टुटता हुआ' बदमिया और लवंगी में मेहनत - मजदूरी करनेवालों स्त्री का चित्रण है। बदमिया और लवंगी ऐसे नारी पात्र हैं जिनका स्वर वैचारिक धरातल पर नवजागरण का संदेश देता है। जो प्रेमिका और साहसी स्वावलंबी विचारील नारी है। नागार्जुन द्वारा रचित 'उग्रतारा' उगनी एक संघर्शील नारी है। जो समय और परिस्थितियों को उनकी यथार्थ पृष्ठभूमि पर उतारती है। जो परिस्थितियों से समझौता न करते एक दृढ़ चरित्र की भाँति अपना जीवन जीती है। मणिमधुकर कृत 'सफेद मेमने' की सुरजा एक भाविताली स्त्री के रूप में प्रस्तुत की गयी है। वह परिस्थितियों की गिकार होकर नहीं हारती बल्कि इसमें और भावित आ जाती है। इसी तरह माला रामकुमार भ्रमर द्वारा रचित 'कॉच घर' उपन्यास में माला का चित्रण हुआ है। जो अपने जीवन में अनेक अत्याचार सहन करती है। और अंत में विरोध भी करती है। रामदरा मिश्र कृत 'सूखता हुआ गुलाब' की चैनैया चमारिन जो ग्रामीण जीवन में व्याप्त यौन भ्रष्टाचार को बेपर्दा करती है। जगदीश चंद्र द्वारा लिखित 'धरती धन अपना' में तानों एक प्रमुख नारीपात्र है जो अपने प्रगतिशील विचारों को लेकर आगे बढ़ती है किंतु परिस्थितियों का गिकार बनकर उसके जीवन का अंत होता है। भगवती चरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में रेखा एक ऐसा नारीपात्र है जो आत्म-निर्णय का क्षमता रखनेवाला पात्र है। ममता कालीया के उपन्यास 'नरक - दर- नरक' में उशा का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली दिखाया है। उसी तरह मन्नु भंडारी का प्रसिद्ध उपन्यास 'आपका बंटी' है। जिसमें भाकुन एक स्वावलंबी नारी है, जो अपने जो अपने पति को परास्त करने के लिए जीवन के एस वर्ष ज्यों- त्यों गुजार देती है, लेकिन अंतिम छोर पर अपने को परास्त पाती है। उशा प्रियवंदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुशमा जो अपने भाई बहनों तथा माँग को पुरा करने के लिए निमित्त अपने आपको समर्पित करती है।

लक्ष्मीकांत वर्मा कृत 'टेरा कोटा' उपन्यास की मिति एक साक्त नारी पात्र है। जो आगे चलकर आई.ए.एस. की उच्च पदवी हासिल करके अपने कठोर परिश्रम से कलेक्टर बन जाती है, और अपने परिवार की सारी सुख-सुविधाओं की पूर्ति करती है। मोहन राको के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में नीलिमा को एक आधुनिक और स्वतंत्र व्यक्तित्वाली नारी के रूप में चित्रित किया है। निरुपमा सेवती के 'पतझड़ की आवाजें' की अनुभा एक आधुनिक नारी, स्वत्व और अभिमान का, संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। कुसुम अंसल के उपन्यास 'उस तक' की मुक्ता अनुभा की तरह पढ़ाई के लिए खूब संघर्ष करती है। मंजुला भगत कृत उपन्यास 'अनारो' की नायिका अनारो एक संघर्शील एवं परिस्थितियों से टकराने का साहस रखती है। कांता भारती कृत 'रेत की मछली' की नायिका कुंतल जिसके सामने अनेक समस्याएँ तथा संत्रासपूर्ण स्थितियाँ हैं, लेकिन उसकी चारित्रिक दृढ़ता तथा प्रतिकूलताओं से टकराने की क्षमता भलाघनीय कही जा सकती है। क्षितिज भार्मा कृत 'उकाव' की नायिका भयामा जो किसी कांति का बिगुल नहीं बजाती, लेकिन यह भी सच है कि वह खुद को हालात और नियति के भरोसे भी नहीं छोड़ देती। नागार्जुन कृत 'उग्रतारा' उपन्यास की नायिका 'उगनी' भी एक कांतिकारी और विद्रोही नायिका है। हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'नदी फिर बह चली' की परबतिया, गोपाल उपाध्याय कृत 'एक टुकड़ा इतिहास' कि चनुली अर्थात् चंदा देवी, मैत्रेयी पुष्पा कृत 'इदन्नमम्' की मंदा सुरेंद्र वर्मा कृत 'मुझे चोंद चाहिए' की वंशा वशिष्ठ, प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' की प्रिया ऐसे नारी चरित्र हैं जो समाज की जर्जर मान्यताओं को एक चुनौती मानकर उसका विरोध करती हैं, नई राह पर चलने का प्रयास करती हैं।

साठोत्तरी उपन्यासकारों के उपन्यासों में विचार, संवेदना और भाषा के धरातल पर स्त्री-विर्मा का वैविक आयाम ऐसी भावित मानी जाती सकती है जो आत्मपरक है, वैचारिक प्रस्थाख्यान है। इन उपन्यासकारों ने काल और अवका की सीमा को लॉंघकर और इतिहास की विरासत को नकारकर स्त्री विर्मा प्रस्तुत किया है। कल के सीमित स्त्री-विर्मा द्वारा स्त्री शिक्षा, घर से बाहर निकालना, विधवा- विवाह का समर्थन, अंधविवास आदि को समेटा गया था। यह मामुली बात नहीं। उसे मौन-कांति कही जा सकती है। इन उपन्यासकारों ने स्त्री विर्मा का जो परिचय दिया है, अपनी - अपनी अलग पहचान बनाने के लिए स्वतंत्रता के विविधा रूपों को अपनाया। अपने प्रचलित दायरों को तोड़कर 'मैं' की भौली में लेखक - वाचक-पात्र-प्रसंगों सबसे सीधी बातचीत करने लगा है।

मनुष्य परंपरा को सुरक्षित रखने में स्त्री को केंद्रीय भूमिका देने का काम साठोत्तरी उपन्यासकारों ने दिया है। पुरुष आज भी समाज के केंद्र में हैं और स्त्री परिधि में हैं। आज वह तनकर खड़ी हो गई है। उसका अपना दृष्टिकोन बहुत कुछ बदल गया है। अब वह पुरुष के सम्मुख हारकर आत्मसमर्पण नहीं करती, अपनी पूरी भावित के साथ लड़ती है।

जब हम साठोत्तरी उपन्यासकारों के उपन्यासों की बात करते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि पुरुष रचनाकारों की और

स्त्री रचनाकारों की दृष्टि अलग-अलग है। पुरुष रूढ़ियों को तोड़ने का दिखावा कर रहा है। पर नारी के प्रति उसकी दृष्टि नहीं बदली। वही अहं आज भी पुरुष में मौजूद है। किंतु कुछ-कुछ परिवर्तन अब नये-नये उपन्यासों में दिखाई देता है। और यह परिवर्तन आवश्यक भी है क्योंकि जब तक शिक्षित वर्ग स्त्री के बारे में नये सिरे से नहीं सोचेगा और साहित्य में परिवर्तन नहीं दिखायेगा तब तक कोई परिवर्तन नहीं होगा।

मुझे ऐसा लगता है कि साठोत्तरी स्त्री लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री के अलग-अलग रूप हमें देखने को मिलते हैं, उनके अपने-अपने अनुभव हैं, आर्दा हैं, मंजिले हैं, वजूद हैं, उपलब्धियाँ हैं। यह अनुभव, आर्दा, वजूद उपन्यासों में व्यक्त हुआ है। वे उनकी अनुभूति हैं। चाहे स्त्री उपन्यासकार हो या पुरुष उपन्यासकार, इनके लेखन से हमारे समक्ष यह विचार उठा होता है कि क्या आनेवाला कल स्त्री भाषा को नया आकार देगा? क्या स्त्री-पुरुष को समान अधिकारों की प्राप्ति भी होगी या नहीं? क्या स्त्री के अस्तित्व को सही मायने में हिंदी साहित्य पहचान पायेगा? क्या हिंदी उपन्यास में स्त्री-विर्मा चेतना के उस धरातल पर जाकर समय और पाठक से सीधा रिता जोड़ पायेगा? यह सभी प्रश्न अनुत्तरित हैं या भाग्यद इसके उत्तर मुझे नहीं मिल पाये।

1. स्त्री साक्षिकरण के विविध आयाम – डॉ. ऋशभदेव भार्मा
2. स्त्री के लिए जगह – राजकिशोर
3. स्त्री उपेक्षिता – सीमोन दबोठवार
4. स्त्रीत्वादी विर्मा – समा भार्मा
5. नारी अस्मिता : हिंदी उपन्यासों में सुदेा बगा
6. औरत, अस्तित्व और अस्मिता – अरविंद जैन
7. समकालीन महिला लेखन – डॉ. ओमप्रकाश भार्मा
8. स्त्रीवादी साहित्य विर्मा – जगदीश चतुर्वेदी
9. हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना – डॉ. उशा यादव
10. आधुनिक कथा – साहित्य में नारी स्वरूप और प्रतिमा – डॉ. उमा भुक्ल

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org